ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	**DTVF/19(JS)–ESY-E1**	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

Name: VIVESH **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19 / F011

Center & Date: M. Ngr. 1st Aug 2019 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 08277016

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज़्यादा अवसरों की असमानता है।

   Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.

2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।

   To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.

3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।

   The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.

4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

   If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

खंड–B / SECTION –B

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।

   "The unexamined life is not worth living".

2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।

   The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.

3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज़्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।

   The hands that serve are holier than the lips that pray.

4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

   Religion without ethics is like a body without soul.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. अत्यधिक असमानता, आय की असमानता से ज़्यादा अवसरों की असमानता है।

Excess of inequality is rather an inequality of opportunity than an inequality in income.

2. विश्व की ऊर्जा ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन भविष्य का ओपेक होगा।

To meet the energy requirement of the world, the International Solar Alliance will be the OPEC of the future.

3. भारतीय संघवाद की सहकारी एवं जीवंत प्रकृति तथा इसके सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ।

The cooperative and vibrant nature of Indian federalism and the challenges before it.

4. यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

If we want to avoid the future destruction, we have to change the direction of our development.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

यदि हमें अगस्त्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा

विकास एंव विनाश दो विपरीतार्थक शब्द प्रतीत होते हैं क्योंकि विकास का संबंध प्रगति, उत्थान, उन्नति से है तो वहीं विनाश का संबंध पश्चगामन, पतन, व अवनति, विध्वंस, एंव समाप्ति से है। परन्तु यदि अच्छे से विश्लेषण करें तो विनाश की पूर्वपीठिका विकास की ही है यदि इसकी दशा व दिशा सही निर्देशित नहीं हो।

सवाल यह उठता है कि विकास एंव विनाश का संबंध क्या है? विकास क्या है, इसके विभिन्न आयाम क्या है? क्या वर्तमान विकास की दिशा के सभी क्षेत्र विनाश की ओर प्रगतिशील हैं? हमें क्या दिशा में परिवर्तन की आवश्यकता होगी तथा यह कैसे संभव होगा? इन तमाम सवालों के जवाब खोजकर हम यह

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विश्लेषण कर पाएंगें कि 'यदि हमें भविष्य के विनाश से बचना है तो विकास की दिशा को बदलना होगा।

विकास एक व्यापक शब्द है। पुरानी स्थिति से कुछ भी बेहतर स्थिति विकास के दायरे में आती है। उदाहरण के लिए तार युक्त टेलीफोन का विकसित रूप गैर तार वाला टेलीफोन। विकास का क्षेत्र व्यापक है यह व्यक्तिगत जीवन में शारीरिक मानसिक विकास से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक है इसके विभिन्न रूप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, नैतिक, धार्मिक विकास है।

विनाश विकास का विपरीतार्थक है। व्यक्तिगत स्तर पर विनाश मानसिक व शारीरिक पतन हो सकता है तो धार्मिक स्तर पर संस्थाओं, अवसंरचनाओं का नष्ट हो सकता है, नैतिक स्तर पर नैतिक पतन, सामाजिक स्तर पर सामाजिक मूल्यों में गिरावट हो सकती है। आर्थिक स्तर पर यह आर्थिक संकीर्णता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

के मानवीं संवृद्धि, प्रति व्यक्ति आय, आय असमानता आदि में अत्यधिक कमी हो सकती है

हम बारी-बारी उपरोक्त विभिन्न क्षेत्रकों में विकास की दिशा में पहचान कर यह पता लगाने की कोशिश करेंगें कि यह विनाश की ओर उन्मुख है तथा इसमें क्या बदलाव की आवश्यकता है।

<u>सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्तर</u> व्यक्ति का विकास वर्तमान में केवल नैतिक विकास तक सीमित हो गया है। उसका लक्ष्य आर्थिक उन्नति बेहतर करना, प्रतिष्ठा प्राप्त करना, प्रसिद्धि प्राप्त करना ही रह गया है। शारिरिक, मानसिक व नैतिक विकास में कमी आ रही है जिससे भविष्य में उसे नैतिक पतन, आपराधिक प्रवृत्ति, अवसाद, अकेलापन, चिंताओं से जूझना पड़ सकता है।

व्यक्ति आत्मिक विकास, आत्मिक मजबूती की प्राप्ति की दिशा में प्रयास कर अपना विकास सही दिशा में उन्मुख कर सकता है। उसे नैतिकता-

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

की अंधी दौड़ से खुद को अलग कर आत्मविश्लेषण, चिंतन, मनन, ध्यान, व्यायाम आदि पर ध्यान केंद्रित करना होगा। ऐसा कर वह प्रसन्नचित्त भी रहेगा और इसका लाभ समाज व देश को मिलेगा।

मौलिक स्तर पर देखें तो विकास बनाम् पर्यावरण का द्वन्द्व देखने को मिलता है। मानव अपनी साज सुविधा पर इस कदर अंधा हो चुका है कि प्रकृति शोषण का शिकार हो चुकी है। जिसका भविष्य में विनाश के रूप में प्रभाव देखने को मिलेगा। इसके बीज वर्तमान में भी देखें जा सकते हैं। महाराष्ट्र में कोयना बांध से आने वाला भूकम्प, बाढ़ से जान माल का नुकसान; चक्रवातों से, सुनामी से तट का बहना, द्वीप का डूबना (हाल ही में इंडिया पोर्ट का डूबना) इसके उदाहरण हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मौलिक विकास व पर्यावरण के संबंध में गांधीजी ने कहा भी है - "प्रकृति के पास सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता है लेकिन लालच की नहीं।

मानव को अपने लिए नैतिक विकास की दिशा में पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी को भागीदार बनाना होगा। दोनों के बीच संतुलन बना कर आगे बढ़ना होगा। सतत विकास, पारिस्थितिकी विकास इको-फ्रेंडली उत्पाद, इको टूरिज्म आदि इसके उपाय हैं।

विकास की चर्चा में समाज को शामिल किए बिना विश्लेषण को गति नहीं मिलेगी। समाज में विकास व्यक्तिवाद, अपनी श्रेष्ठता, अपनी मान्यताओं, विचारधाराओं के दुष्प्रचार के रूप में देखने को मिलता है जिससे समाज में अलगाववाद, कट्टरवाद, श्रेष्ठता की भावना का विकास देखने को मिलता है।

ऐसी भावनाओं की परिणति आतंकवाद,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दंगों, सांप्रदायिक एवं धार्मिक तनाव, क्षेत्रवाद, सामाजिक वैमनस्यता के रूप में देखने को मिलती है। सामाजिक विकास की दिशा को सही निर्देशित करने के लिए हमें सामाजिक मूल्यों यथा सहिष्णुता, सर्व धर्म समभाव, धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देना होगा। अंधानुकरण से बचकर अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करनी होगी।

समाज की आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु शासन व्यवस्थाओं का निर्माण हुआ और इसका महत्वपूर्ण आयाम राजनैतिक विकास है। यद्यपि समानता, स्वतंत्रता जैसे अधिकारों; मानवता, मानवाधिकार जैसी अवधारणाओं, लोकतंत्र जैसी व्यवस्थाओं से राजनीतिक विकास हुआ है किंतु कुछ देशों में इसकी गति दिशाहीन है।

राजनीति एक साधन है जिसका साध्य जन कल्याण, नागरिकों का विकास है किंतु कभी-

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कभी राजनीति को साध्य मानकर मनुष्यों को साधन बनाया जाता है। यथा राजनीतिक के नाम पर सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद को बढ़ावा। जिससे आंदोलनों में हिंसा का प्रभाव मनुष्यता पर ही पड़ता है।

मूल्य विहीन राजनीति को नैतिक परक राजनीति से विस्थापित होने की आवश्यकता है। नेताओं को व्यक्तिगत विकास से ऊपर उठ कर जन विकास लक्ष्य बनाना होगा तभी राजनीतिक विकास को दिशा मिलेगी तथा अशिक्षा की विनाश की संभावनाओं से बचा जा सकेगा।

केवल ये ही वे क्षेत्र नहीं है जहाँ विकास को दिशा परिवर्तन की आवश्यकता है। आर्थिक विकास की दिशा में भी सकारात्मक परिवर्तनों की आवश्यकता है। वर्ल्ड बैंक की एक रिपोर्ट के मुताबिक विश्व की 90% सम्पत्तियों पर केवल जनसंख्या के 2% हिस्से का अधिकार है

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

यह आर्थिक पिछड़ापन की गलत दिशा को प्रभावित करता है। व्यापक असमानता भविष्य में ऐसे संघर्षों को जन्म देगी जिससे शांति व स्थायित्व को खतरा उत्पन्न होगा। इसकी झलक वर्तमान में उपजे नक्सलवाद में देखी जा सकती है। जिसने ना केवल शासन, समाज व स्थानीय नागरिकों को प्रभावित किया गया है बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चुनौती उत्पन्न की है।

आर्थिक तंत्र चाहे कोई भी पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद इसका लक्ष्य मनुष्यता तथा मानव विकास होना चाहिए यह तभी संभव होगा जब आर्थिक समानता होगी, सबको अपना विकास करने का मौका मिलेगा, पर्याप्त अवसरों की समानता होगी तथा हर वर्ग को समान आर्थिक अधिकार मिलेगें। व्यक्तिगत आर्थिक विकास की तुलना में सामुदायिक विकास की अवधारणा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को स्थापित करना है।

विज्ञान एंव वैज्ञानिक विकास ऐसा विषय है जिसकी चर्चा किए पूर्ण विश्लेषण नहीं किया जा सकता। विज्ञान भी मानव के लिए साधन हो लेकिन ऐसा वैज्ञानिक विकास किस काम का जिसमें क्षण भर में संपूर्ण सृष्टि को समाप्त करने की क्षमता हो। ऐसे विकास से बचने के लिए प्रसिद्ध कवि दिनकर जी ने कहा है-

"विज्ञान है अगर तलवार तो
त्याग दे तू इसे, कर
निज स्मृति दे पार इसे तू"

विज्ञान के विविध क्षेत्रों यथा तकनीक ने विकास व विनाश दोनों को सुनिश्चित किया है तो वहीं जैव तकनीकी विकास ने प्रकृति के सिद्धांतों को ही बदलने की कोशिश की है। क्लोनिंग, DNA तकनीक, जीन तकनीकियों ने ना केवल

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मनुष्य- मनुष्य के संबंधों को प्रभावित किया है बल्कि मनुष्य को साधन भी बनाया है।

सूचना तकनीक का विकास की ऐसी दिशा जिसमें अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को उपकरणों को सौंप देना शामिल हो भविष्य के लिए व्यक्ति, समाज व देश के लिए खतरा है। अक्सर सोशल मीडिया की कुछ गतिविधियों के कारण आत्महत्याएँ सुनने व देखने को मिलती है।

क्या संपूर्ण विकास को ही नई दिशा देने की आवश्यकता है। ऐसा नहीं है, ऐसा विकास जो मनुष्य व मनुष्यता के लिए किया जा रहा हो वह सही दिशा में है यथा अन्तरिक्ष क्षेत्र में विकास, स्वास्थ्य क्षेत्रक में रोग निदान हेतु प्रयास। हमने प्राचीन काल से अब तक कई विकास के दौर से गुजरे है वह सभी विकास सही दिशा में है जो व्यक्ति, समाज,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

राष्ट्र व मनुष्यता के लिए खतरा नहीं है।

संपूर्ण चर्चा के बाद हम निष्कर्ष तक पहुंचे तो हम पाएंगे कि विकास के कई क्षेत्रों में हमारी दिशा भविष्य के विनाश के खतरों को उत्पन्न कर रही है। जिसके कुछ परिणाम वर्तमान में भी देखे जा सकते हैं। हमें विकास के सभी आयामों पर एक तार्किक विश्लेषण करना होगा एवं आवश्यक परिवर्तन लाने होंगे ताकि इन विनाश की संभावनाओं को कम किया जा सके।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि विकास ही विनाश को जन्म देता है। मनुष्य का साध्य मनुष्यता है विकास एक साधन है इसे साध्य बनने से रोकना होगा।

---

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–B / SECTION –B

1. अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं।
   "The unexamined life is not worth living".
2. धरती ईश्वर की है और मानवता उसकी संरक्षक है न कि स्वामी।
   The earth belongs to God and humanity is its patron, not the master.
3. प्रार्थना करने वाले होंठ से ज़्यादा पवित्र मदद करने वाले हाथ होते हैं।
   The hands that serve are holier than the lips that pray.
4. नैतिकताविहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।
   Religion without ethics is like a body without soul.

नैतिकता विहीन धर्म आत्मारहित शरीर के समान है।

आत्मा रहित शरीर व आत्मा युक्त शरीर में ऊपरी तौर पर देखें तो आत्मा न होने व होने का फर्क है लेकिन यह फर्क इतना बड़ा है कि यह जड़ को चेतन व चेतन को जड़ बना देता है।

यही चेतनता है जो शरीर में गति, क्रिया, बुद्धि, शक्ति, बल, का संचार करती है

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

शरीर की इन गतिविधियों को संचालित करने के लिए नैतिकता एक सहायक भूमिका अदा करती है। नैतिकता के विभिन्न स्रोतों में धर्म एक महत्वपूर्ण स्रोत है। प्रश्न में नैतिकता विहित धर्म की आत्मा रहित शरीर से तुलना की गयी है।

इस तुलना को समझने के लिए हमें हमें महत्वपूर्ण शब्दों यथा नैतिकता, धर्म, आत्मा, व शरीर के शाब्दिक, लाक्षणिक व व्यापक अर्थों को समझना होगा। तभी हम यह विश्लेषण कर पाएंगे कि क्या ऐसा है?

नैतिकता से आशय एक ऐसी व्यवस्था से जो शुभ - अशुभ, सही - गलत, अच्छे - बुरे में भेद करना सिखाती है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

धर्म से कई आशय हो सकते हैं। यह विचारों, मान्यताओं, रीते रिवाजों, रहन-सहन, बलों का एक संयोजन हो सकता है यथा हिंदू, मुस्लिम, सिख, जैन पारसी, इसाई आदि।

यह कांट व गांधी के अनुसार व्यक्ति का कर्तव्य हो सकता है तो गीता के अनुसार अपने सांसारिक कर्तव्यों का पालन।

आत्मा एक ऐसी इकाई है जो ना केवल जड़ चेतन का भेद करती है बल्कि सक्रियता व निष्क्रियता के मध्य अन्तर भी करती है

शरीर से आशय एक ऐसे ढांचा से है जो एक क्रियात्मक इकाई है। सांकीर्ण अर्थों में यह मनुष्य शरीर हो सकता है लेकिन व्यापक अर्थों में यह कोई भी ढांचा - संस्था

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

समाज, राष्ट्र या विश्व हो सकता है

"नैतिकता विहीन धर्म आत्मा रहित शरीर" होने से आशय धर्म में नैतिकता का वही स्थान होने से है जो शरीर में आत्मा का है। अर्थात् नैतिकता धर्म को क्रियात्मकता प्रदान करती, इसे संचालित करती है तथा नियंत्रित भी करती है। सारांश में हम इसे धर्म में नैतिकता के महत्व के रूप में मान सकते हैं।

धर्म व्यक्ति / समाज / राष्ट्र / विश्व का व्यवहारात्मक पक्ष है जिसे निर्देशित करने के लिए एक व्यवस्था तंत्र की आवश्यकता होगी अन्यथा हर किसी का व्यवहार यादृच्छिक होगा तथा अव्यवस्था ही अव्यवस्था फैल जाएगी। यह नैतिकता द्वारा संचालित होता है यह समाज के स्थायित्व के लिए अमृत के समान है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

यदि हम धर्म को एक मान्यता के रूप में ले और इसे मान्यताओं के, विचारों के, विश्वासों के समूह के रूप में ले तो विश्व व समाज हिंदू, मुस्लिम, सिख ईसाई जैसे नामों की इकाइयों में बंट जाएगा जिनमें एक अनुयायी समूह होगा जो व्यक्तियों का होगा।

सबसे छोटी इकाई के रूप में व्यक्ति को स्वीकारा जा सकता है। व्यक्ति अपने धर्म से गहरे स्तर पर जुड़ा होता है। यह जुड़ाव उसके बाल्यकाल से ही शुरू हो जाता है चूंकि धर्म का व्यक्ति से गहरा जुड़ाव है अतएव उसके व्यवहारों को नियंत्रित करने में भी काफी बड़ा स्थान है। अतएव धर्म में नैतिकता एक व्यापक स्तर पर व्यक्तियों के समूहों में नैतिकता को परिलक्षित करेगी। इसकी वही शक्ति का

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

होगी जो शरीर में आत्मा की है बशर्ते हम स्वीकार लें कि व्यक्ति के जीवन में वही भूमिका है जो शरीर में आत्मा की।

इस अर्थ में धर्म में नैतिकता से आशय ऐसे विचारों, मान्यताओं व मूल्यों से है जो समाज में स्थायित्व व शांति लाएं। किसी अन्य समुदाय पर खतरा पैदा नहीं करें। यथा सर्वधर्म समभाव। क्योंकि धार्मिक श्रेष्ठता की भावना व अन्य धर्मों के प्रति हीन भावना व टकराव की भावना समाज में तनाव पैदा करती है जैसा साम्प्रदायिकता में होता है। सहिष्णुता, सर्वधर्मसमभाव, धर्मों का आदर, मानवतावादी दृष्टिकोण, क्षमा, दया, परोपकार आदि ऐसे नैतिकता के तत्व हैं जो धर्म में आवश्यक हैं।

चूंकि आत्मा का स्वरूप विकासशील माना गया है उसी प्रकार नैतिकता का स्वरूप

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

भी विवेचनशील होना चाहिए। धर्म में निहित ऐसी मान्यताओं को अस्वीकारने की आवश्यकता है जो मानव व मनुष्यता के लिए खतरा उत्पन्न करे। जिस प्रकार सती प्रथा को धर्म की अनैतिक गतिविधि करार देकर दूर किया गया।

धर्म के इस अर्थ में नैतिकता विकास से आशय अपने धर्म की गलत मान्यताओं को पहचानना तथा मनुष्यता से उसका संबंध स्थापित करना। अंधविश्वासों, रूढ़ियों आदि से धर्म का परिष्करण भी इसमें सम्मीलित है) इस अर्थ में नैतिकताविहीन धर्म धार्मिक पुट में बदल जाता है और इसकी हिंसात्मक अभिव्यक्ति सांप्रदायिक दंगों के रूप में होती है जो हमें वर्तमान में अकसर देखने को मिलते हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

धर्म के व्यापक अर्थ में इसका संबंध अपने कर्तव्य/व्यवहार पालन से है इसमें इकाई व्यक्ति, संस्थाएं, परिवार, समाज, राष्ट्र या विश्व हो सकता है। सभी के व्यवहार नैतिकता से संचालित होने चाहिए।

व्यक्ति के स्तर पर देखें तो व्यक्ति को परिवार, समाज राष्ट्र कुछ दायित्व सौंपता है या यूँ कहे कि संस्था में शामिल होने का कर्तव्य सौंपता है। यह उस संस्था रूपी शरीर को चलाने के आवश्यक है। परिवार के स्तर पर नैतिकता का आशय पारिवारिक कर्तव्यों का पालन, गृहस्थ जीवन का पालन, संबंधों में सत्यनिष्ठता, बड़ों के प्रति आदर, देखभाल छोटों के प्रति प्यार की भावना है

समाज के स्तर पर व्यक्ति को सामाजिक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कर्तव्यों का पालन करना पड़ता है जिसमें सांस्कृतिक मूल्यों का पालन हो यदि व्यक्ति अनैतिक होगा तो समाज पर इसका बुरा असर पड़ेगा। समाज संकुचित होगा।

व्यक्ति के राष्ट्र के प्रति नैतिक कर्तव्यों में राष्ट्रवाद की भावना रखना तथा शासन इकाई के सम्यक् संचालन में योगदान देने से है। यह व्यक्ति के वोट देने, कर अदा करने, गैर कानूनी गतिविधियों से अपने को दूर रखने जैसा हो गया है। संक्षेप में एक सजग नागरिक के रूप में अपने कार्यों का निष्पादन है। यह कर्तव्य पालन की अवधारणा के रूप में धर्म की व्याख्या की पहली इकाई व्यक्ति की नैतिकता का महत्व है।

यदि इकाई समाज को मान लिया जाए

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

तो समाज में भी नैतिकता आवश्यक है। समाज को रूढ़िवादी न होकर प्रगतिशील होना सामाजिक नैतिकता है। सामाजिक नैतिकता को, मूल्यों को थोपने की बजाय अंतः करण में स्थापना का प्रयास करना चाहिए। महिलाओं की कपड़े पहने की आजादी छीनना, हॉनर किलिंग, पितृसत्तात्मकता, आदि इसी इकाई की अनैतिकता के उदाहरण हैं।

राष्ट्र को यदि इकाई माने और राष्ट्र के धर्म की नैतिकता की चर्चा करें तो एक राष्ट्र को स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व जैसे मूल्यों को देश में लागू करना चाहिए। नैतिकता राष्ट्र को भी दिशा निर्देशित करेगी। राष्ट्र को राष्ट्रीय हित व अन्तर्राष्ट्रीय हित में कार्य करने को प्रेरित करेगी। उदाहरण के लिए नैतिकता राष्ट्रीय व्यवहार को प्रेरित करती है भारत ने परमाणु नीति में यह सिद्धांत

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अपनाता है कि गैर परमाणुसम्पन्न राष्ट्र पर प्रयोग नहीं किया जाएगा। यह नैतिकता राष्ट्र रूपी शरीर को अन्य राष्ट्रों का सहयोग करने, संबंध विकसित करने, अल्प विकसित राष्ट्रों को सहायता देने को प्रेरित करती है

नैतिकता का क्षेत्र यहाँ तक ही सीमित नहीं है। यह विश्व रूपी शरीर में आत्मा की भांति है। विश्व को "वसुधैव कुटुंबकम" की प्रेरणा देती है। यह विश्व को पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय घटकों की सुरक्षा हेतु प्रेरित करती है। अन्तरिक्ष के साझा उपयोग व अन्तरिक्ष से जुड़ी चुनौतियों के समाधान हेतु एक प्लेटफार्म पर लाती है। यह नैतिकता ही है जो पूरे अंतर्राष्ट्रीय समुदायों को एक कर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं को बनाए रखती है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस संपूर्ण विश्लेषण से हम निष्कर्ष की ओर बढ़ सकते हैं। धर्म और नैतिकता आपस में संबद्ध है वह चाहे धर्म का संकीर्ण अर्थ हो या व्यापक अर्थ। और यह जुड़ाव वही है जो शरीर का आत्मा के साथ। नैतिकता विहीन धर्म संपूर्ण गतिविधियों को शून्य बना देता है बल्कि विनाश का कारण भी बना सकता है।

जिस प्रकार आत्मा की पवित्रता को स्वीकारा गया है उसी प्रकार नैतिकता की पवित्रता को स्वीकार कर हम धर्म ~~कर्म~~ में स्थान देकर इस शरीर रूपी संसार में एक गुणवत्ता युक्त, प्रतिष्ठित, संतुष्टकारी जीवन जी पाएंगें।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation